ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त आर्यजगत् को
महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 38, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 फरवरी, 2015 से रविवार 8 फरवरी, 2015
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला– 2015 के अवसर पर प्रगति मैदान में

वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार का यज्ञ

जन साधारण तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने हेतु आप भी अपनी आहुति अवश्य दें

स्टाल उद्घाटन
14 फरवरी, 2015
प्रात: 11:30 बजे

विद्वानों व कार्यकर्ताओं से आह्वान पुस्तक मेले में करें समय दान

हिन्दी : हॉल नं. 12
स्टाल : 219 –225

अंग्रेजी साहित्य
हॉल नं. 1ए स्टाल : 379

मेला समापन
22 फरवरी, 2015
रात्रि 8 बजे

हमारा सौभाग्य है कि महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर पुस्तक मेले का शुभारम्भ हो रहा है। अत: आप सब और अधिक बढ़-चढ़कर भागीदारी करें तथा सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने में सहयोग करें।

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु सहयोग जमा करें
'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900
एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025
कृपया अपनी सहयोग राशि जमा करने के उपरान्त श्री विजय आर्य जी मो. 9540040339 को तत्काल सूचित करें एवं अपनी अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें।

दिल्ली के प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेला 14 फरवरी से 22 फरवरी 2015 तक आयोजित किया जा रहा है। इस 'विश्व साहित्य कुम्भ' में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में वैदिक साहित्य के 8 स्टॉल होंगे जिनमें सात स्टॉल हिन्दी और एक स्टाल अंग्रेजी साहित्य का होगा। वेद एवं वेद से परिपोषित साहित्य की महत्ता, उपयोगिता, विद्या, धर्म, शिक्षा संस्कृति, सभ्यता, राजधर्म, आध्यत्मिक आधिदैविक, आधिभौतिक विज्ञान, वर्णाश्रम, जन्म, जीवन, मत्यु एवं मत मतान्तरों की विवेचना तथा सत्यासत्य का ज्ञान कराने वाला महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ को घर-घर एवं जन-जन तक पहुँचाने के लिए कृत संकल्प दिल्ली सभा ने इस अमूल्य उत्कृष्ट ग्रन्थ को मात्र 10/- रुपये में दिए जाने की व्यवस्था की है। जिससे कि यह महान् ग्रन्थ प्रत्येक उस व्यक्ति तक पहुँचे जो पढ़ने की इच्छा रखता हो और वह अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझकर अपने जीवन का उत्थान कर सके। यह ऐतिहासिक सत्य है कि अनेक दिक्भ्रमित लोगों ने जब-जब सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा तो उनके जीवन की धारा में परिवर्तन ही नहीं हुआ अपितु महापुरुषों की श्रेणी में उनको ला खड़ा किया। ऐसी ही एक सत्य घटना इस अंक में भी प्रकाशित है जिससे प्रेरणा पाकर आप इस ग्रन्थ की महत्ता को जानेंगे और इस विचारधारा को गति प्रदान करने हेतु इस यज्ञ में तन-मन-धन से अपनी सहभागिता सुनिश्चित करेंगे।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर समस्त दिल्ली में स्थान-स्थान पर लगाए जाएंगे प्रसाद एवं साहित्य वितरण के केन्द्र

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर बदले न जाने कितने जीवन

सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर न जाने कितने महानुभावों के जीवन बदले। किसी को सत्यार्थ प्रकाश किसी मित्र ने दी, किसी को रद्दी में मिली, किसी ने बस अड्डे के स्टाल से खरीदी। लेकिन किसी भी तरह से जिसको भी सत्यार्थ प्रकाश मिली उसे पढ़ने के पश्चात् उसके जीवन में अद्भुत परिवर्तन हुए। प्रस्तुत घटना भी ऐसा ही एक ऐतिहासिक प्रकरण है।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर बने आर्य संन्यासी

एक समय की बात है पंजाब में एक पौराणिक साधु स्वामी सर्वदानन्द जी हुआ करते थे। वे स्थान-स्थान पर घूमते हुए धर्म प्रचार का कार्य करते थे। एक बार घूमते हुए एक गाँव में पहुँचे तो वहाँ पर जाकर स्वामीजी बीमार पड़ गए। कई रोज हो गए तो एक दिन एक सद्गृहस्थ उनके पास आया तो देखा महाराज बड़े रुग्ण हैं वह अपनी दैनिक क्रियाओं को करने तक में असमर्थ थे तो वह गृहस्थ स्वामीजी को अपने घर पर ले गए और वहीं पर उनकी खूब मन लगाकर सेवा की। जब स्वामी जी स्वस्थ हो गए तो

– शेष पृष्ठ 7 पर

आयंजन ईमेल, एस.एम.एस.,फेस बुक, ट्वीटर, व्हट्स एप्प आदि के माध्यम से स्टाल नं. की सूचना पहुंचाकर जन-साधारण को आमन्त्रित करने में सहयोगी बनें

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु वैदिक साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची
पृष्ठ 2 पर

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

यज्ञ : सायं 3:15 बजे **भजन संध्या :** सायं 4:15 बजे **प्रीतिभोज :** सायं 7 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनें।

निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज कीर्ति नगर एवं पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के समस्त अधिकारी, कार्यकर्त्ता एवं सदस्यगण

यज्ञ : प्रात: 8 बजे **कार्यक्रम :** प्रात: 10 बजे **सार्वजनिक सभा :** दोपहर :1:30 बजे

टीवी चैनल पर सीधा प्रसारण सौजन्य : MDH

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करें

निवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र कुमार रैली	राजीव आर्य	अरुण प्रकाश वर्मा
प्रधान	व. उप प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

वेद-स्वाध्याय

वेद ज्ञान मानवमात्र के लिए

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय। प्रियो देवानां
दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु।।
यजु० २६/२

अर्थ—हे मनुष्यो! मैं ईश्वर जैसे **(ब्रह्मराजन्याभ्याम्)** ब्राह्मण, क्षत्रिय **(अर्याय)** वैश्य **(शूद्राय)** शूद्र **(च)** और **(स्वाय)** अपने स्त्री सेवक आदि **(च)** और **(अरणाय)** उत्तम लक्षण प्राप्त हुये अन्त्यज के लिये भी **(जनेभ्यः)** पूर्वोक्त सब मनुष्यों [मानव-मात्र] के लिये **(इह)** इस संसार में **(वाचम्)** चारों वेद रूप वाणी का **(आवदानि)** उपदेश करता हूँ वैसे आप लोग भी अच्छे प्रकार उपदेश करें।

हे प्रभो! आपके आशीर्वाद से मैं इस वेदवाणी का प्रचार-प्रसार करता हुआ (देवानां प्रियो भूयासम्) दक्षिणा देने वाले का प्रिय होऊँ। दक्षिणा देने वाले को भी प्रसन्नता का अनुभव हो (अयं मे कामः समृध्यताम्) यह मेरी इच्छा पूर्ण होवे (अदः) और चारों वेदों का ज्ञान देने वाला परमेश्वर भी (मा उपनमतु) मुझे समीपता से प्राप्त हो अर्थात् मैं अपने इस कार्य से प्रभु की आराधना करने वाला बनूँ।

वेदज्ञान का प्रचारक प्रभु से इस ज्ञान की प्राप्ति के लिये प्रार्थना करता हुआ कहता है—

बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदय च्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा॥ यजुः० २६.३॥

हे बृहस्पते! **(यद् अति अर्यः अर्हात्)** जिस वेदज्ञान को इन्द्रियों का स्वामी [अर्यः स्वामीवैश्ययोः] जितेन्द्रिय ही प्राप्त करने योग्य होता है **(द्युमत्)** द्यु-लोक के समान मानव हृदय को प्रकाशित करने वाला **(जनेषु क्रतुमत्)** मनुष्यों के लिये कर्त्तव्य-कर्मों को करने के लिये **(विभाति)** विशेष रूप से प्रकाशित होता है **(तत् चित्रं द्रविणमस्मासु धेहि)** उस अद्भुत वेदज्ञान रूपी धन को हमें दीजिए। हे **(ऋत प्रजात)** ऋत=शाश्वत नियमों के संस्थापक प्रभो! **(यत् शवसः दीदयत्)** जो वेदज्ञान अपनी महिमा से सर्वत्र प्रतिष्ठित होता है उस वेदज्ञान को हम में स्थापित कीजिए। **(एष ते योनिः)** यह वेदज्ञान आपसे ही प्रादुर्भूत हुआ है। **(बृहस्पतये त्वा)** उसकी प्राप्ति के लिये मैं **(उपयाम गृहीतो असि)** यम-नियमों का पालन करते हुये आपकी उपासना करता हूँ।

ईश्वर की वाणी को जानने के लिये उसके स्वामी परमेश्वर को जानना चाहिये। उसको जानने के पश्चात् ही साधक के हृदय में वेदज्ञान का प्रकाश होगा। सृष्टि के आदि में ईश्वर ने चार ऋषियों के हृदय में चारों वेदों का ज्ञान दिया और उनके अर्थ जानने के लिये जब वे समाधिस्थ हुये तो ईश्वर ने उन्हें जनाया। महर्षि दयानन्द जी भी जिस वेद मन्त्र को नहीं समझ पाते थे तब समाधि में उसका प्रत्यक्ष करके ही पण्डितों को उसका अर्थ लिखाते थे।

वेदज्ञान-प्राप्ति के इच्छुक को प्रभु कहते हैं—

इन्द्र गोमन्निहायाहि पिबा सोमꣳशतक्रतो। विद्यद्भिर्ग्रावभिः सुतम्। यजुः० २६.४॥

(इन्द्र गोमन् इह आयाहि) हे स्तोता, जितेन्द्रिय विद्वन्! आप वेदज्ञान के लिये आओ तो सही। **(शतक्रतो)** बहुविध प्रतिभाओं के धनी **(विद्यद्भिः)** [दो अवखण्डने] तुमने अपनी वासनाओं को क्षीण कर दिया है और मेरी **(ग्रावभिः)** स्तुतियों से उत्पन्न **(सोमं पिब)** इस सोमरस का पान कर। शरीर में उत्पन्न इस सोम [वीर्य] को शरीर में ही सुरक्षित करने वाला बन।

स्तोता कहता है—हे प्रभो! आप (उपयाम गृहीतोऽसि) आप यम-नियमों का पालन करते हुये उपासना द्वारा जाने जाते हो। मैं वेदज्ञान की निधि रूप आपकी उपासना करता हूँ। (एष त्वा योनिः) इस वेदज्ञान के आप ही देने वाले हो। वेदज्ञान-प्राप्ति के लिये प्रथम वीर्य-रक्षा और फिर प्रभुभक्ति करनी आवश्यक है। इसीलिये ब्रह्मचर्य का अर्थ वीर्य-रक्षण, वेदाध्ययन और ईश्वर चिन्तन है।

वेदज्ञान सभी के लिए

(सत्यार्थप्रकाश, तीसरा समुल्लास)

स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामितिश्रुतेः। स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है।

उत्तर—सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को पढ़ने का अधिकार है। यह श्रुति तुम्हारी कपोल कल्पना मात्र है। वेदादि शास्त्र पढ़ने-सुनने का अधिकार यजुर्वेद के २६ वें अध्याय मन्त्र-२ में [यथेमां वाचं-] दिया है।

परमेश्वर कहता है (यथा) जैसे मैं सब मनुष्यों के लिये इस वेदवाणी का उपदेश करता हूँ वैसे ही तुम भी किया करो। क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिये निषेध और द्विजों के लिये विधि करे? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि को पढ़ाने-सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथिवी जल अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिये बनाये हैं वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं। जहाँ-जहाँ निषेध किया है उसका अभिप्राय यह है कि जिसको पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आवे वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहाता है। उसका पढ़ना-पढ़ाना व्यर्थ है। और जो स्त्रियों के पढ़ाने का निषेध करते हो वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रमाण है। देखों वेद में कन्याओं के पढ़ने का प्रमाण—

ब्रह्मचर्येण कन्याꣳ युवानं विन्दते पतिम्। अथर्व० ११.५.१८॥

प्रश्न—क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें? उत्तर—अवश्य; देखो श्रौतसूत्रादि में—**इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्।**

अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रों को पढ़ी न होवे तो यज्ञ में स्वर-सहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत-भाषण कैसे कर सके? भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़के पूर्ण विदुषी हुई थीं यह 'शतपथ ब्राह्मण' में लिखा है।

- *क्रमशः*

प्रेरक प्रसंग

मैं वैदिक धर्म का उपदेशक हूँ

पश्चिम पंजाब का एक परिवार बस में यात्रा कर रहा था। इस परिवार को अपने सगे-संबंधियों के यहाँ शादी पर जाना था। इन्होंने मुलतान में बस बदली। बस बदलते हुए इनका एक ट्रंक अनजाने में बदल गया। किसी और यात्री का ट्रंक भी ठीक उन्हीं के जैसा था। आगे की बस द्वारा यह परिवार अपने सगे- सम्बन्धियों के घर पहुँचा। वहाँ जाकर ट्रंक खोला तो उसमें तो पुस्तकें व रजिस्टर, कापियाँ ही थीं। जिस यात्री के हाथ इनका ट्रंक आया, वह भी मुल्तान से थोड़ी दूरी पर कहीं गया। वहाँ जाकर इसने ट्रंक खोला तो इसमें आभूषण व विवाह-शादी के वस्त्र थे। इसे यह समझने में देर न लगी यह समान तो बस में यात्रा कर रहे किसी ऐसे परिवार का है जिसे विवाह में सम्मिलित होना है। सोचा वह परिवार कितना दुःखी होगा, तुरंत लौटकर ट्रंक सहित मुल्तान आया। बस अड्डे पर बैठकर बड़े ध्यान से किसी व्याकुल, व्यथित की ओर दृष्टि डालता रहा।

उधर से वे लोग पुस्तकों वाला ट्रंक लेकर रोते-धोते आ गये। उनको थोड़ा सन्तोष था कि पुस्तकों, रजिस्टरों पर ट्रंक वाले का नाम पता था, परन्तु साथ ही संशय बना हुआ था कि क्या पता वह भाई अपना ट्रंक न पाकर खाली हाथ ही रहा हो और अपने ट्रंक के लिए परेशान हो। इस परिवार को ट्रंक सहित रोते-चिल्लाते आते देखकर दूर बैठे दूसरे यात्री ने पुकारा और कहा कि दुःखी होने की कोई अवश्यकता नहीं, यह लो तुम्हारा ट्रंक। अपने माल की पड़ताल कर लो।

अब इस परिवार की प्रसन्नता का कोई पारावार ही नहीं था। पुस्तकों वाला ट्रंक लौटाते हुए अपना बहुमूल्य सामान लेकर उस यात्री को बहुत बड़ी राशि पुरस्कार स्वरूप भेंट करने लगे तो वह यात्री बहुत विनम्रता से गरजती हुई आवाज में बोला, 'यह क्या कर रहे हो?' 'यह आपकी ईमानदारी के लिए प्रसन्नतापूर्वक पुरस्कार दिया जाता है' उस परिवार के मुखिया ने प्रसन्नता पूर्वक कहा।

इस यात्री ने कहा 'ईमानदारी इसमें क्या है? यह तो मेरा कर्त्तव्य बनता था। मैं वैदिक धर्म का उपदेशक हूँ। ऋषि दयानन्द का शिष्य हूँ।'

उस भाई ने एक पैसा भी स्वीकार न किया। सारे क्षेत्र में दूर-दूर तक आर्यसमाज की वाह! वाह! होने लगी। सब ओर इस घटना की चर्चा थी। स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ ने यह कहानी उन दिनों एक लेख में दी थी। यह पुस्तकों वाला भाई आर्यसमाज का एक पूजनीय विद्वान् पं.मनुदेव थे। यही विद्वान् आगे चलकर पं. शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी के नाम से विख्यात हुआ। ऐसे लोग मनुजता का मान होते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

1.	श्री विद्यामित्र ठुकराल, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली	5000/-
2.	आर्यसमाज नया बांस, दिल्ली	5000/-
3.	श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली	5000/-
4.	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली	4000/-
5.	आर्यसमाज कालकाजी, नई दिल्ली	4000/-
6.	आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली	5000/-
7.	आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली	2000/-
8.	आर्यसमाज औचन्दी, दिल्ली	2000/-
9.	आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली	2000/-
10.	आर्य समाज विवेक विहार, दिल्ली	2000/-
12.	आर्य समाज नारायणा, नई दिल्ली	2000/-
13.	आर्यसमाज नरेला, दिल्ली	2000/-
14.	आर्यसमाज नजफगढ़, दिल्ली	2000/-
15.	आर्यसमाज आर्य नगर पहाड़गंज, नई दिल्ली	2000/-
11.	श्रीमती श्रीबाला चौधरी दरियागंज, नई दिल्ली	800/-

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** - *महामन्त्री*

आखिर क्या है वैलेंटाइन डे?

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को समाज में इस प्रकार तोड़ा जा रहा है जिसका कोई बखान नहीं कर सकता और यदि लेखनी भारतीयता की व्यथा को व्यक्त करने की कोशिश भी करे तो उसे चारों ओर से कुचलने का प्रयास किया जाता है। पुनरपि ये लेखनी अपने कर्त्तव्य को कैसे भूल सकती है। ये तो अपने कर्म के प्रति सदैव कटिबद्ध रहती है। इसी लिए इसे ब्राह्मण की गौ कहा गया है अर्थात् ब्राह्मण की वाणी। ब्राह्मण को वेद सदैव आदेश देता है कि तू अपने कर्त्तव्य (जागृति) का विस्तार सदा करता रहे। जब-जब भी समाज में अन्धकार का वर्चस्व फैला है तब-तब लेखनी ने सूर्य के अद्वितीय प्रकाश के समान अन्धकार का दमन किया है।

आज भी कुछ इसी प्रकार हो रहा है। सभी को घोर अन्धकार ने इसप्रकार घेर लिया है जैसे किसी व्यक्ति के पास अपनी श्रेष्ठ वस्तु है किन्तु वह दूसरे की तुच्छ वस्तु से इतना आकृष्ट हो जाता है कि अपनी श्रेष्ठ वस्तु को भुला देता है।

हमारे देश में ऋतुओं के अनुसार पर्व तथा उत्सव मनाने की अद्वितीय परम्परा है। वसन्त पंचमी, मकर संक्रान्ति, माघ पूर्णिमा, श्रावणी उपाक्रम, होलिकोत्सव, दीपोत्सव आदि अनेक पर्व इस देश में एक नवीन ऊर्जा का संचार करते हैं किन्तु दुर्भाग्य है इस भारतवर्ष की युवा पीढ़ी का जिसने अपने ऊर्जावान् पर्वों को भुला दिया और पाश्चात्य पर्वों को मनाने की प्रथा शुरू कर दी। पाश्चात्य देशों में उन पर्वों को मनाने के पीछे कोई न कोई कारण जरुर रहा होगा, जिसकी वहां आवश्यकता होगी। किन्तु बिना किसी कारण को जाने हमारे भारतवासी भाई लोग इन पर्वों को अपनी मन-मर्जी से मनाते हैं। मनाने के साथ-साथ कभी यह भी विचार नहीं करते कि हम जो ये पर्व मना रहे है, इसका उद्देश्य क्या है? क्या लाभ होगें? इत्यादि।

वैलेंटाइन डे, फ्रैंडशिप डे आदि अनेक पाश्चात्य पर्वों को मनाने के लिए हम सदैव उद्यत रहते हैं किन्तु अपने पर्वों को मनाने के लिए जगाना पड़ता है, शोभायात्राएं निकालनी पड़ती हैं, लोगों को भारतीय पर्वों की ओर आकृष्ट करने के लिए प्रलोभन दिये जाते हैं। फिर भी भारतीय पर्वों के प्रति निराशा भरा वातावरण चहुं ओर दृष्टिगोचर होता है।

अभी हाल में ही फरवरी मास में युवाओं को अपनी ओर सर्वाधिक आकृष्ट करने वाला पाश्चात्य सभ्यता का पर्व वैलेंटाइन डे आ रहा है। जिस पर्व के सत्यार्थ को न समझ लोग मौज-मस्ती में निमग्न हो सब कुछ गलत कर बैठते हैं। बिना शादी-शुदा हुए ही भोग-विलासिता की सभी हदें पार कर देते हैं। आखिर क्या कारण है जो इस पर्व को मनाया जाता है? इसके पीछे क्या रहस्य छिपा हुआ है? क्योंकि पर्व मनाने के पीछे कोई न कोई उद्देश्य एवं रहस्य अवश्य छिपा होता है। इस वैलेंटाइन डे की भी बहुत लम्बी कहानी है।

सुहृद पाठकों! आज से कई वर्षों पूर्व यूरोप की दशा वर्तमान यूरोप से बहुत निम्नस्तर की थी। यूरोप में पहले शादियां नहीं होती थीं। लोग रखैलों में विश्वास रखते थे। पूरे यूरोप भर में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिल सकता जिसकी एक शादी हुई हो अथवा जिसका एक स्त्री के साथ सम्बन्ध रहा हो। ये परम्परा उनके यहां आज से ही प्रचलित नहीं है अपितु कई हजार वर्षों से यही होता चला आ रहा है। यूरोप के बड़े-बड़े लेखक, विचारक तथा दार्शनिक भी इन्हीं परम्पराओं में संलिप्त थे। वे भी ऐसे ही मौज-मस्ती भरे जीवन को जीना पसन्द करते थे। प्लूटो जैसा दार्शनिक भी एक स्त्री से सम्बन्ध नहीं रखता प्रत्युत अनेक स्त्रियों से रखता था। प्लूटो खुद इस बात को इस प्रकार लिखता है कि 'मेरा 20-22 स्त्रियों से सम्बन्ध रहा है' अरस्तु, रुसो आदि पाश्चात्य विचारक इसी प्रकार के थे। इन सभी पाश्चात्य दार्शनिकों ने हैवानियत की सभी हदें पार करते हुए मातृतुल्य पूजनीय स्त्रियों के सन्दर्भ में एकमत होकर कहते हैं कि- ' स्त्री में तो आत्मा होती ही नहीं है। स्त्री तो मेज और कुर्सी के समान है, जब पुरानी से मन भर जाये तो नयी का प्रयोग करो'।

ऐसी घृणित मान्यता को देख कई बार लोगों का पत्थर दिल भी पिघल कर विद्रोह की भावना को जन्म देता है। ऐसे अनेक यूरोपियन हुए जिन्होंने बीच-बीच में इस प्रचलन का विरोध किया। ऐसे ही विरोधियों में एक वैलेंटाइन नामक व्यक्ति भी था जिसने इस कुप्रथा के प्रति आवाज उठायी। उसका कहना था कि हम लोग जो शारीरिक सम्बन्ध रखते हैं, वह कुत्तों की तरह, जानवरों की तरह का है, ये अच्छा व्यवहार नहीं है। इससे शारीरिक रोग होते हैं। इसका सुधार करो, एक पति एक पत्नी के साथ विवाह करके ही रहे, विवाह के बाद ही शारीरिक सम्बन्धों को स्थापित करें। ऐसी बातों को वैलेंटाइन ने घूम-घूम कर लोगों को बताया और लोग भी जागृत हुए। संयोगवश वह एक चर्च के पादरी बन गये। चर्च में आने वाले प्रत्येक नागरिक को ऐसी ही सलाह देने लगे तो लोग प्राय: पूछ लेते कि आप ऐसा क्यों कर रहे हो? अपनी परम्पराओं को क्यों तोड़ना चाहते हो? दोष युक्त होने पर भी अपनी संस्कृति तो अच्छी होती है, पुनरपि आप ये सब क्यों कर रहे हो? इसके उत्तर में वह कहते कि आज-कल मैं भारतीय सभ्यता और दर्शन का अध्ययन कर रहा हूं और मुझे लगता है कि भारतीय सभ्यता तथा भारतीय जीवन श्रेष्ठ है और इसे स्वीकार करने में कोई हानि भी नहीं है। इसीलिए आप लोग मेरी बात को स्वीकार करो, कुछ लोग उनकी उस बात को स्वीकार करते और कुछ लोग अस्वीकार कर देते। धीरे-धीरे चर्च में ही शादियां कराने लगे। सैकड़ों की संख्या में शादी होने लग गई तथा अनेक लोग इस घृणित कार्य से रुक गये। वैलेंटाइन के इस कार्य की सूचना पूरे रोम में जगह-जगह होने लगी। धीरे-धीरे ये बात रोम के राजा क्लौड़ीयस तक भी पहुंच गयी। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा ने तुरन्त वैलेंटाइन को बुलाकर कहा कि - तुम ये क्या गलत काम कर रहे हो? तुम अधर्म क्यों फैला रहे हो? अपसंस्कृति को अपना रहे हो? हम बिना शादी के रहने वाले लोग हैं, मौज-मस्ती में डूबे रहने वाले लोगों को तुम बन्धन में बांधना चाहते हो, ये सब गलत है। वैलेंटाइन ने कहा - महाराज! मुझे लगता है कि ये ठीक नहीं है। ये बोलते ही राजा ने एक न सुनी और तुरन्त ही उसे फांसी की सजा सुना दी। क्लौड़ीयस ने उन सब को बुलाया, जिनकी वैलेंटाइन ने शादी करायी थी।

14 फरवरी 498 ईस्वी को खुले मैदान में, सार्वजनिक रूप से वैलेंटाइन को फांसी की सजा दे दी गई। जिन लोगों की वैलेंटाइन ने शादी करायी थी, वे लोग बहुत दु:खी हुए, इसी दु:ख की याद में वैलेंटाइन डे मनाना शुरु हुआ।

आज ये वैलेंटाइन डे भारत में भी आ गया है पर ये बिल्कुल विपरीत है। जिस भारतवर्ष को वैलेंटाइन ने एक आदर्शवादी देश के रूप में स्वीकार कर अपने देश को भी उसी प्रकार बनाने का विचार किया था। जिस देश में शादी होना एक मान्य बात है, आज वहीं बिना शादी के घूमना तो एक आमबात (सामान्य) है। कहां हम किसी के आदर्शवादी थे और आज हम अपने देश को उसी गर्त में ले जाना चाह रहे हैं, जिस गर्त से वैलेंटाइन अपने देश को बचाना चाहता था।

भारतीय लोग पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण मात्र ही नहीं कर रहे अपितु उसका अन्धानुकरण कर रहे हैं। वैलेंटाइन डे का यह दिवस बड़ा विचित्र है। जो दिवस उस पाश्चात्य महापुरुष के दु:ख के रूप में स्वीकार किया जाता है। आज वही दिवस उसके सिद्धान्तों से सर्वथा विपरीत होता जा रहा है। भारतवर्ष में शादी के पवित्र बन्धन को तोड़ने के लिए इस दिवस को मनाया जाता है।

अब ये वैलेंटाइन हमारे स्कूलों, कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में आ गया है, बड़ी धूम-धाम के साथ इसे मनाया जा रहा है। लड़के-लड़कियां बिना कुछ सोचे-विचारे एक दूसरे को वैलेंटाइन डे का कार्ड दे रहे हैं। और जो कार्ड होता है उसमें लिखा होता है कि- "Would You Be My Valentine"? इसका मतलब किसी को मालूम नहीं होता है और अन्धी दौड़ में बस भागते ही रहते हैं। वे समझते हैं कि हम जिस किसी से प्यार करते हैं उसको ये कार्ड दिया जाता है, इसलिए इस कार्ड को वे सभी को दे देते हैं। ये कार्ड एक या दो लोगों को नहीं देते अपितु दस-बीस लोगों को दे देते हैं। कोई उनको इस कार्ड में लिखे वाक्य का तात्पर्य भी नहीं समझाता।

इस कार्य को बढ़ावा देने के लिए टेलीविजन चैनल इसका बहुत प्रचार तथा प्रसार करते हैं। बड़ी-बड़ी कम्पनियां अपने काम-धंधे को विस्तृत करने के लिए कार्ड, गिफ्ट, चॉकलेट आदि को दुगुनी अथवा तिगुनी रकम में बेचते हैं।

यदि किसी लड़की को गुलाब दिया जाये और वह लड़की उस गुलाब को स्वीकार कर ले तो वैलेंटाइन और न स्वीकार करे तो उसी क्षण उसके चहरे पर तेजाब डाल दिया जाता है। ये कैसी परम्परा है? जिस कन्या को देवी के तुल्य समझा जाता है, उसी देवी के साथ खिलवाड़ हो रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि नारी ने बहुत तरक्की की है, लेकिन यह भी सच है कि हमारे पुरुष प्रधान देश में आज भी नारी को दबाया जाता है। समय आ गया है कि हम नारी का सम्मान करें। क्योंकि कहा भी गया है- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। आओ! हम सब मिलकर नारी का सम्मान करें। देश को पुन: विश्वगुरु बनाने का यत्न करें।

- शिवदेव आर्य, गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून
shivdevaryagurukul@gmail.com

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्यसमाज द्वारा
31वें पुस्तक मेला भुवनेवर (ओडिशा) में वेद प्रचार
10 फरवरी से 21 फरवरी, 2015
स्थान : प्रदर्शनी मैदान, यूनिट -111, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

सर्व सज्जनों को जानकर हर्ष होगा कि 31वाँ पुस्तक मेला भुवनेश्वर ओडिशा में दिनांक 10 फरवरी से 21 फरवरी 2015 तक चलेगा जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज ओडिशा के संयुक्त तत्त्वावधान में ''वैदिक साहित्य भी उपलब्ध रहेगा जिसमें, हिन्दी-संस्कृत, अंग्रेजी एवं उड़िया भाषा में वैदिक साहित्य अल्प मूल्य पर उपलब्ध होगा। सभी आर्य जन पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य क्रय करें, दूसरों को प्रेरित कर धर्म प्रचार-प्रसार में अपेक्षित सहयोग प्रदान करें जिससे वैदिक दुर्लभ ज्ञान, सुलभ बनकर जन-जन तक पहुँचे।

स्वामी सुधानन्द सरस्वती (9861339060)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों के इतिहास लेखन का कार्य प्रारम्भ किया था। जो अनेक कारणों से पूर्ण नहीं हो सका है। अनेक आर्य समाजों ने किन्हीं कारणों वश अपने समाज का इतिहास लेखन प्रारम्भ ही नहीं किया या पूरा नहीं कर सके। कई आर्य समाजों को यह जानकारी देना आवश्यक है कि किन-किन तथ्यों को लेकर आर्यसमाज का इतिहास लिखा जाए? उन महानुभावों के सहयोगार्थ हम इस अंक में आर्य समाज करोल बाग का इतिहास प्रकाशित कर रहे हैं जिससे कि इसका अध्ययन कर इस ऐतिहासिक लेख पर आधारित अपने आर्यसमाज का इतिहास लिखकर शीघ्रता पूर्वक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजें। आप आर्य समाज करोल बाग के इतिहास से सम्बन्धित लेख को आर्य सन्देश पत्रिका से इन तीन पृष्ठों को काटकर सुरक्षित रख लें जिससे कि एक इतिहास वृतांत का संरक्षण हो सके। हम आर्य समाज करोल बाग के पदाधिकारियों के बड़े आभारी है कि उन्होंने बड़ी निष्ठा, मेहनत एवं लगन से अक्षरशः क्रमबद्ध व सुन्दर तरीके से इसे लेखनीबद्ध कर अपने आर्य समाज करोग बाग के अतीत को भेजा। हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हम इसे 'आर्य सन्देश' पत्र में प्रकाशित कर आप सबके समक्ष पहुँचा पा रहे हैं। पुनः सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से अनुरोध है कि अपने-अपने आर्य समाज का इतिहास लिखकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजें, जिससे सभा आर्य समाजों के इतिहास प्रकाशन कार्य को पूरा कर सके। - महामन्त्री

आर्य समाज करोलबाग का गौरवशाली अतीत

करोलबाग एक साधारण सी बस्ती थी। इसमें गावों से आए हुए लोग ही अधिकतर रहना पसंद करते थे। उन दिनों यहाँ पर न तो सड़कें थी और न ही पानी या बिजली का प्रबन्ध। इस इलाके की सफाई भी संतोष जनक न थी। जगह छोटी होने के कारण यहाँ के लोग आपस में एक दूसरे के सुख-दु:ख में शामिल होना अपना कर्त्तव्य समझते थे।

संयोग की बात है कि यहाँ पर आर्य विचारों के कुछ वयोवृद्ध और नवयुवक आ बसे। इनमें ठाकुरदास मेहता जी भी थे। वे इस इलाके के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनमें वैदिक धर्म के प्रचार की बड़ी लगन थी हर समय जन कल्याण की धुन लगी रहती थी। करोलबाग के निकटवर्ती रैगरपुरा क्षेत्र में तो वह देवता की तरह पूजे जाते थे।

उन दिनों करोलबाग में कन्याओं को पढ़ाने की सुविधा नहीं थी। इस कमी को ध्यान में रखकर ठाकुरदास मेहता जी ने सत्यपाल भसीन, हकीम नानकचंद जी का सहयोग लिया। रैगर बिरादरी के आर्य विचारों वाले सज्जनों से मिलकर यहां पर कन्याओं की शिक्षा का प्रबन्ध करने का दायित्व चौधरी बोधाराम जी, चौधरी कन्हैया लाल जी खजांची, चौधरी बिहारी लाल जी, चौधरी घनश्याम सिंह जी, चौधरी खूबराम जी आदि आर्य सज्जनों ने बड़े उत्साह से इस काम को अपने हाथों में लिया। सत्यपाल भसीन आर्य समाज के प्रधान तथा नानकचंद जी मन्त्री रहे।

इन सज्जनों के प्रयास से सन् 1927 में रैगरपुरा में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना हुई। ठाकुरदास मेहता जी और बाद में श्री कुन्दनलाल जी आहुजा बरसों तक इस आर्य पाठशाला के प्रबन्धक रहे। उसके पश्चात् श्री सत्यपाल भसीन ने मन्त्री पद पर कार्य किया।

करोलबाग क्षेत्र में कन्याओं की केवल यही पाठशाला थी। इस पाठशाला में पानी पिलाने और भोजन पहुँचाने वाली देवियां भी रैगर बिरादरी से ही थी। इस विद्यालय में कट्टर पौराणिक परिवारों की कन्याएं भी शिक्षा पाने आती थी। इस पाठशाला के माध्यम से जहां वैदिक विचारधारा का प्रचार कन्याओं में किया जाता था वहां छुआछूत की भावना मिटाने का सक्रिय कार्य भी होता था। उन दिनों यहां आर्य समाज के सभासदों की संख्या तो जरुर कम थी परन्तु उनमें धर्म प्रचार के प्रति अत्यन्त उत्साह और लगन थी। यहां के सभासदों का इस क्षेत्र में बड़ा मान था और वे बड़े आदर की दृष्टि से देखे जाते थे लोगों में इनकी सूझ-बूझ की भी धाक थी। ठाकुरदास मेहता जी के अलावा लाला गोविंद राम जी, पंडित शत्रुघ्न जी, हकीम नानक चंद जी, पंडित रामस्वरूप जी, लाला कन्हैया लाल जी गोयल, लाला राम रिछपाल जी, लाला खुशीराम सहगल जी, घनश्याम सिंह गुप्ता, रामनारायण पटवारी के नाम उल्लेखनीय हैं।

करोलबाग की बस्ती दिनों-दिन बढ़ रही थी। इस क्षेत्र में आर्य समाज के अलावा और कोई संस्था नहीं थी। इसलिए आर्य समाज का सदस्य बनने में लोग अपना गौरव अनुभव करते थे। यहां पर आकर बसने वाले आर्य परिवार, आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे और खूब प्रचार करते थे। इनमें लाला देवदत्त जी आर्य, प्रो० रामसिंह जी और कुन्दन लाल जी आहूजा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनकी अद्वितीय सेवाओं से आर्य समाज करोलबाग का नाम न केवल दिल्ली में अपितु भारत की कुछ प्रमुख समाजों में लिया जाने लगा।

आर्य भाइयों का आपसी प्रेम, लगन, सेवा और संगठन देखकर मन अत्यन्त प्रसन्न होता था। लाला नारायणदत्त जी ठेकेदार, लाला देशबन्धु जी गुप्त, प्रो० सुधाकर जी एम.ए., प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति और श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त का सक्रिय सहयोग इस समाज को सदा ही मिलता रहा। आर्य समाज करोल बाग की ख्याति बढ़ाने में इन सज्जनों का योगदान रहा। आरम्भ में ही आर्य समाज को पंडित मूलचन्द व मुन्नालाल जी ने बड़ी उदारता से दुमंजिला भव्य भवन दान कर दिया। परंतु यहां पर आर्य समाज थोड़े ही दिन लगी थी कि सरकार ने इसे अपने अधिकार में ले लिया सरकार का तर्क यह था कि यह स्थान रिहायशी मकान के लिए है। मंदिर के रूप में इस सम्पत्ति का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। सरकार से इस बारे में समझौता करने की कोशिशें की गई परन्तु उनका कोई फल नहीं निकला। अंत में लाहौर हाई कोर्ट में मुकदमा दायर किया गया। महाशय कृष्ण जी, लाला टेकचन्द जी एडवोकेट और लाला अछरुराम जी ने इस मुकदमे की पैरवी बड़ी मुस्तैदी से की। हाई कोर्ट ने यह फैसला दिया कि मकान पर सरकार का कब्जा नाजायज है मगर वह जमीन का पट्टा रद्द करने की हकदार हैं। इसके बाद प्रभु की कृपा से वह समय भी आ गया जब अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। तब श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त व लाला देशबन्धु जी गुप्ता ने भारत सरकार को सारी परिस्थिति से अवगत करवाया। इस प्रकार यह संपत्ति पुनः आर्य समाज को प्राप्त हुई। यह मकान आज भी हरध्यानसिंह रोड पर स्थित है। इस सम्पत्ति को वापस दिलवाने में सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त ने, जो प्रमुख कांग्रेसी नेता भी थे, उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

इस सम्पत्ति के सम्बन्ध में मेहता ठाकुर जी और सत्यपाल भसीन ने दिल्ली के तत्कालीन चीफ कमिश्नर श्री जैकिंस साहब से भेंट की। चीफ कमिश्नर साहब ने श्री गुप्ता जी से कहा "यह जायदाद सरकार की है और किसी भी कीमत पर इसे वापस नहीं दिया जा सकता।" परन्तु गुप्त ने अपने स्वभाव से बलपूर्वक उत्तर दिया, "मैं सार्वदेशिक सभा का प्रधान हूं इस नाते दुनिया भर की जायदाद मेरी है, मैं भीख मांगने नहीं आया। आपने मेरी जायदाद पर बलपूर्वक कब्जा कर रखा है। भला मैं आप को इसकी इजाजत कैसे दे सकता हूं।" इस पर चीफ कमिश्नर महोदय ने इस मामले पर फिर से विचार करने का आश्वासन दिया। यद्यपि अन्त में बात न बन सकी किन्तु गुप्त जी की निर्भय और अकाट्य दलीलें सुनकर मन को अत्यन्त संतोष प्राप्त हुआ। यह सब सच है या गलत, निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। परन्तु आर्य समाज को जो सूचना दी गई वह यह थी, "कोई भी अंग्रेज चीफ कमिश्नर इस जायदाद को लौटाने पर सहमत नहीं। इस संपत्ति के बारे में सरकारी फाइल में कोई ऐसा नोट है जिसमें

- शेष पृष्ठ 5-6 पर

आर्यसमाज करोल बाग के वर्तमान भवन का मुख्य द्वार। गौरवशाली अतीत के झरोखे में आर्यसमाज करोल बाग द्वारा आयोजित शोभायात्रा में बैलगाड़ियों पर सवार आर्यजन।

लिखा है कि इस आर्यसमाज में क्रान्तिकारी, जिनमें सरदार भगत सिंह और उनके साथी भी सम्मिलित हैं, आश्रय लेते रहे हैं। इस सम्पत्ति के जब्त होने पर आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन चौराहों पर या आर्य परिवारों के घरों में लगते रहे। कुछ दिनों के बाद आयुर्वेदिक व युनानी तिब्बिया कालेज करोल बाग के कुछ आर्य समाजी छात्रों ने अपने किराए के मकान में समाज के सत्संग लगाने शुरु किए। आरम्भ में इस क्षेत्र में आर्य समाज के सामने कार्य का विस्तृत क्षेत्र था। उन दिनों आय के साधन कुछ भी नहीं थे परन्तु सभासदों ने अपनी अवैतनिक सेवाएं देकर इस कमी को अनुभव नहीं होने दिया। इसके बाद हरध्यानसिंह रोड पर ढाई रुपया प्रति मास किराये पर भवन लिया गया। उन्हीं दिनों हरध्यान सिंह रोड वालों ने वहां आर्य समाज का सत्संग लगाने का प्रस्ताव और जब तक आर्य समाज को वर्तमान भूमि नहीं मिली, आर्य समाज के सत्संग व उत्सव वहीं होते रहे। इस सहायता के लिए आर्य समाज जांगिड ब्राह्मण धर्मशाला का सदा ऋणी रहेगा।

सरकार ने जब आर्य समाज की सम्पत्ति जब्त कर रखी हो और आर्य समाज ब्रिटिश सरकार की आँखों में कांटे की तरह चुभता हो तो आर्य समाज मन्दिर के लिए भूमि देने का प्रश्न ही पैदा न होता था। पांच वर्ष के निरन्तर प्रयास के बाद अंत में परिणाम यह निकला कि उस समय के दिल्ली के इंम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के चेयरमैन श्री जेकिंस ने श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त, लाला देशबन्धु जी गुप्ता तथा प्रो० राम सिंह जी के प्रयत्नों से आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल को अपने कनॉट प्लेस स्थित कार्यालय में मिलने की आज्ञा दे दी। इस प्रतिनिधि मंडल में मेहता ठाकुर जी पंडित मूलराज जी और श्री देवदत्त जी सम्मिलित थे इस मुलाकात में भी एक रोमांचित घटना घटी। कमिश्नर महोदय ने आरम्भ में कह दिया, "मैं तो पक्का बनिया हूं, बिना पैसे के एक इंच भूमि देने को तैयार नहीं।" इस पर प्रतिनिधि मंडल ने कहा, "आप जानते होंगे कि आर्य समाज सुशिक्षितों और सभ्यों की संस्था है। उसके सदस्य अपने सेवा कार्यों के कारण जनता में लोक प्रिय भी हैं। यदि वैदिक चर्चा के लिए स्थान न दिया गया तो अच्छे लोग करोला बाग छोड़ने को तैयार हो जाएंगे। उनकी देखा-देखी और लोग भी यहां से चले जाएंगे। इसका नतीजा यह होगा कि वहां की भूमि कीमत और गिर जाएगी। यदि आप आर्य समाज के लिए भूमि देंगे तो आबादी और बढ़ती जाएगी, जिसके परिणाम स्वरुप वहां की भूमि का मूल्य और भी बढ़ जाएगा। प्रतिनिधि मंडल से कमिश्नर साहब की बातें तो और भी बहुत हुईं परन्तु उपरोक्त बात का प्रभाव उन पर जादू का काम कर गया। वह 250 गज का एक प्लाट देने को तैयार हो गए किन्तु प्रतिनिधि मंडल ने एक हजार वर्ग गज भूमि की मांग की। "इस समय हमें कुछ अधिक जमीन ही मिलनी चाहिए।" इस पर वह दूसरा 250 वर्ग गज का प्लाट भी दो रुपया वर्ग गज की दर से देने पर राजी हो गए। इनसे मिलता हुआ अगला प्लाट आर्य समाज ने बाजार भाव पर खरीद लिया। पहला कमरा जांगिड ब्राह्मण धर्मशाला और श्री कन्हैयालाल जी खजांची ने बनवाया बड़ी श्रद्धा व प्रेम से उन्होंने इसका निर्माण करवाया तथा अपने नाम का पत्थर लगवाने की भी अनुमति नहीं दी। श्री गोकुल चन्द जी आहूजा के सुझाव पर घर-घर जाकर मन्दिर निर्माण के लिए धन एकत्र करने का यत्न किया गया। मन्दिर निर्माण के समय आर्यवीर दल का प्रतिदिन का कार्यक्रम भी होता था। पंडित छेदीलाल जी आर्य भजनोंपदेशक, जो राज मिस्त्री का कार्य भी करते थे, उनसे पूछकर जिस जगह उस दिन काम लगता होता ईंटों का ढेर लगा दिया जाता ताकि एक या दो मजदूरों का खर्चा प्रतिदिन बच जाए। हाल की छत डालने के समय का दृश्य तो देखने योग्य था। तब क्या नवयुवक आर्य सभासद चूने और गारे की परातें स्वयं सिरों पर उठाकर उत्साह से छत डलवा रहे थे। आर्य समाज के वर्तमान मंदिर की आधार शिला श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त द्वारा सन् 1935 में रखी गई। उस समय आर्य समाज के प्रधान श्री सत्यपाल जी भसीन और मन्त्री पंडित रामसिंह जी थे। शिलान्यास का कार्यक्रम श्री अनंतराम जी डाबर की देख-रेख में किया गया। शिलान्यास का समारोह बड़े भव्य ढंग से सम्पन्न हुआ जिसमें दिल्ली के बड़े-बड़े नेता सम्मिलित हुए। श्री घनश्याम जी गुप्त के अतिरिक्त डॉ० गोकुलचन्द जी नारंग तथा श्री के.एम. मुन्शी भी इस समारोह में सम्मिलित हुए।

उस समय एक महत्वपूर्ण विचार यह भी सामने आया जिसे रैगरपुरा के आर्य भाइयों ने प्रस्तुत किया था जिस मार्ग पर आर्य समाज मन्दिर स्थित है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि यह तथाकथित स्वर्ण हिन्दुओं की बस्ती से रैगरपुरा को मिलता है, इसलिए इस मार्ग का नाम '**आर्य समाज मार्ग**' रखा जाए। उन दिनों यह कार्य करवाना बड़ा कठिन था। यह काम कैसे करवाया गया, यह बड़ा ही रोचक है। इससे यह भी पता चलता है कि तब के आर्य भाइयों में कितना उत्साह था।

रैगरपुरा के पास एक सांसी बस्ती थी। इनमें रहने वाले लोग जरायमवेश कहलाते थे। केवल पादरी लोगों को ही उस बस्ती में काम करने की सरकारी अनुमति थी। आर्य समाज करोलबाग को भी इस क्षेत्र में प्रचार की आज्ञा मिलना कठिन था। परन्तु आर्य भाइयों के निरन्तर परिश्रम से आज्ञा प्राप्त हो गई। आर्य समाज के लोगों का कहना था कि पादरी लोग चाहे नियमानुसार ही कार्य कर रहे है परन्तु सांसी लोग क्योंकि हिन्दू हैं अत: हम भी पादरियों को इस कार्य में अपना सहयोग देना चाहते हैं। इस प्रकार सप्ताह में एक बार आर्य समाज को प्रचार की सरकारी अनुमति प्राप्त हो गई। श्री प्रभुदयाल जी नामक एक सज्जन ने स्थायी रूप से प्रचार के लिए अपनी सेवाएं अर्पित कर दी। वे हरिजन उद्धार में पहले से ही रुचि रखते थे। अपने निर्वाह के लिए छह रुपये मासिक लेकर ही उन्होंने कार्य करना स्वीकार किया। किन्तु उस समय इस समाज के बजट में इतनी छोटी रकम का व्यय सहन करने की भी ताकत नहीं थी। तब सोच-विचार करके यह फैसला किया गया कि आर्य समाज का प्रत्येक सभासद अपनी धर्मपत्नी को भी समाज का सभासद बनाए और वह नियमपूर्वक अपने पति के शुल्क का पांचवा भाग समाज को दे।

संयोग की बात है आर्य समाज के सभासदों के शुल्क से होने वाली आय उस समय केवल 30 रुपये ही थी। इस प्रकार उसका पांचवां भाग छह रुपये था। जिससे प्रभुदयाल जी को वेतन देना संभव हो गया। परन्तु इसके साथ ही इस समाज के इतिहास का एक नया अध्याय शुरु हुआ। यहां पर आर्य स्त्री समाज का आरम्भ हुआ। इस विभाग की प्रथम अध्यक्षा एक वृद्धा माता बनाई गई जो माता डंडे वाली के नाम से प्रसिद्ध थी। इन्ही महिला ने बाद में आर्य समाज को शक्ति और गौरव प्रदान किया।

राजनैतिक सभा आर्य समाज करोलबाग का प्रभावशाली संगठन था। यहां के राजनैतिक नेता सदा इस संस्था का समर्थन पान का प्रयास करते थे। 1936 में म्युनिसिपल कमेटी का चुनाव आया तो करोल बाग, रैगरपुरा, देवनगर, शीदीपुरा, दिल्ली क्लाथ मिल्स इत्यादि एक ही वार्ड था। यहाँ से एक प्रतिनिधि ही चुना जाता था। कई लोगों ने यह चुनाव लड़ने की घोषणा की। आम जनता ने आर्य समाज से इस बारे में परामर्श मांगा कि यहां से कौन चुनाव लड़े। तब विख्यात आर्य नेता डाक्टर युद्धवीर सिंह जी से यह चुनाव लड़ने की प्रार्थना की गई। आर्य भाइयों के उत्साह के फलस्वरुप डाक्टर साहब भारी बहुमत से सफल हुए। इसके बाद अगले दो चुनावों में सफल होते रहे। एक बार तो आप यहाँ से विधान सभा के सदस्य भी चुने गए। इन बातों से आर्य समाज करोल बाग का नाम और भी चमक उठा।

आर्य समाज के पास उन दिनों वैतनिक पुरोहित रखने की सामर्थ्य तो थी नहीं। पर इस क्षेत्र में संस्कार करवाने की मांग निरंतर बढ़ती जा रही थी। इसे पूरा करना आवश्यक समझा गया और इस कारण बहुत से सभासदों ने संस्कार करवाने शुरु किए। प्राय: ये संस्कार नि:शुल्क ही करवाया करते थे। पंडित मूलराज जी और पंडित रामचन्द्र जी का नाम इस कार्य में विशेषत: उल्लेखनीय है। इसी के साथ-साथ आर्य विद्वान् प्रो. रामसिंह जी ने सेवाएँ अर्पित की। इसकी उल्लेखनीय बात यह है कि उनकी दक्षिणा उनकी हैसियत के अनुसार मिलती। वे इसे स्वीकार न करके आर्य समाज को दान कर देते। इस प्रकार आर्य समाज की धार्मिक सहायता का एक और रास्ता निकल आया।

जब निजामशाही द्वारा हैदराबाद दक्षिण में गैर मुस्लिमों पर कड़ी धार्मिक पाबंदियों लगा दी गईं। आर्य समाजियों को वहां विशेष रूप से तंग किया जाने लगा। निजाम से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निरंतर प्रार्थना की कि वह पक्षपात रहित नीति अपनाकर मुसलमानों के समान, अन्य धर्मावलंबियों पर से पाबंदियां हटा लें। परन्तु बजाय इसके और पाबंदियां लगा दीं। तब इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने शोलापुर में एक आर्यन कांग्रेस बुलाई जिसके अध्यक्ष बापू जी अणे बनाए गए। आर्यन कांग्रेस ने विवश होकर यह निश्चय किया कि इस परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए हैदराबाद में सत्याग्रह किया जाए। इस समाज की ओर से श्री सत्यपाल जी भसीन प्रतिनिधि के रूप में इस बैठक में सम्मिलित हुए। उन्होंने वहां से लौट कर आर्यन कांग्रेस के उत्साह भरे निर्णयों से सभासदों को अवगत किया। इससे यहाँ के लोगों में उत्साह की लहर दौड़ गई और आर्य समाज के सत्याग्रह को पूरा सहयोग देने का फैसला किया गया। एक सत्याग्रह समिति का गठन हुआ जिसके संयोजक उत्साही नवयुवक श्री खुशीराम जी सहगल को बनवाया गया। इस समिति ने बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य किया। दिल्ली, किशनगंज तथा सराय रोहिल्ला स्टेशनों पर सत्याग्रह के मनोनीत प्रतिनिधियों का स्वागत किए जाने की व्यवस्था की गई। समय-समय पर बाहर

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज करोल बाग के संस्थापक

स्व० घनश्याम सिंह गुप्त	स्व० नारायण ठेकेदार	स्व० कुन्दन लाल आहुजा
स्व० रामनारायण पटवारी	स्व० वैद्यराम गोपाल शास्त्री	स्व० प्रो० राम सिंह
स्व० खुशीराम सहगल	स्व० अनन्तराम डाबर	स्व० सत्यपाल भसीन
स्व० गोविन्द राम		

आर्यसमाज करोल बाग के वर्तमान अधिकारी एवं कार्यकारिणी

संरक्षक : श्री सतीश कल्हन, श्री आज्ञा राम लाम्बा, **प्रधान :** श्री कीर्ति शर्मा, **उप प्रधान :** डॉ० प्रदीप सुनेजा, श्री ज्ञानचंद मैंदीरत्ता, **मंत्री :** श्री विनयव्रत टण्डन, **उप मंत्री :** श्री कमल आर्य, **कोषाध्यक्ष :** श्री हर्ष वर्धन बत्रा, **कार्यालयाध्यक्ष :** श्री सुभाष मल्होत्रा, **कार्यकारिणी सदस्य :** सर्वश्री धर्मवीर मारवाह, श्री वेदव्रत टण्डन, श्री जयदेव गुप्ता एवं श्री महेन्द्र शर्मा।

स्त्री समाज : प्रधाना : श्रीमती शशी मल्होत्रा, **उप प्रधाना :** श्रीमती उषा रानी सुनेजा, श्रीमती इन्दु बहल, **मंत्राणी :** श्रीमती निरुपमा पुरी, **उप मंत्राणी :** श्रीमती रंजना बत्रा, **कोषाध्यक्षा :** श्रीमती प्रोमिला सूद, **उप कोषाध्यक्षा :** श्रीमती दया बहन

पृष्ठ 4-5 का शेष

से जाने वाले जत्थों के स्वागत का प्रबन्ध किया गया। आर्य समाज की ओर से पहला जत्था आचार्य भगवान् देव जी (स्वामी ओमानन्द) जी के नेतृत्व में भेजा गया। इसमें 100 से अधिक सत्याग्रही सम्मिलित थे। दूसरा जत्था स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के नेतृत्व में गया। तीसरा जत्था रैगरपुरा के आर्य भाईयों की ओर से गया। इसका नेतृत्व श्री बिहारी लाल जी ने किया। जब सत्याग्रह में आर्य समाज को भारी विजय प्राप्त हुई तो उसका उचित विवरण एक पुस्तिका में छपवाकर सर्वसाधारण में वितरित किया गया, जिसके लेखक थे- पं. हरिचन्द जी विद्यालंकार।

1947 में पाकिस्तान बनाने का मुस्लिम लीग का आंदोलन जोर पकड़ गया। यहां हिन्दुओं और सिखों के जान-माल का खतरा पैदा हो गया। उस समय आर्य समाज ने हिन्दु और सिख भाईयों को संगठित करके मुहल्लेवार बचाव कमेटियां बनाई। केन्द्रीय बचाव कमेटी का कार्यालय आर्य समाज करोलबाग में बनवाया गया। आर्य समाज के इस प्रयत्न से हिन्दु और सिख परिवारों में हिम्मत और उत्साह की लहर फैल गई। उनके जान-माल की रक्षा हो गई। इस संदर्भ में एक घटना का उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

अकस्मात् ही एक दिन आर्य समाज मन्दिर में बम फटने का जोरदार धमाका हुआ। उस मन्दिर में हकीम नानकचन्द जी बैठे थे। उनका एक हाथ बम से उड़ गया। उनको तत्काल अस्पताल ले जाया गया। इस पर मुस्लिम लीगियों ने यह आरोप लगाया कि इस मन्दिर में बम बनाकर जगह-जगह वितरित किए जाते हैं। परन्तु यह आरोप निराधार सिद्ध हुआ। पुलिस वहाँ पर तत्काल ही पहुँच गई थी। फिर भी कोई आपत्तिजनक सामग्री नहीं मिली। असल में मन्दिर को नष्ट करने का प्रयास किया गया था। पुलिस ने आदरणीय स्वामी धर्मानन्द जी को गिरफ्तार किया जो उन दिनों मन्दिर में ही रहते थे, यह समाचार सुनकर स्वामी जी के घनिष्ट साथी और कांग्रेस के बड़े नेता श्री सी.के. नयर हवालात में उनसे भेंट करने गए। उन दिनों वह ची० कमिश्नर की एडवाइजरी कौसिंल के सदस्य थे। थानेदार ने उन्हें स्वामी जी से मिलने नहीं दिया। इस पर कुछ गरमा गरमी हो गई और उसने नायर जी को भी हवालात में बन्द कर दिया। बाद में थानेदार को मुअत्तल कर दिया गया और एक जांच कमेटी बैठी, जिसने बाद में सुलह सफाई करवाकर थानेदार को बहाल कर दिया। स्वामी धर्मानन्द जी के विरुद्ध मामले को वापस ले लिया गया। अस्तु।

पाकिस्तान बन गया तो सताए गए हिन्दुओं और सिखों का दिल्ली में, विशेषकर करोल बाग में तांता लग गया। उस समय आर्य समाज ने शरणार्थियों की सेवा में कोई कमी नहीं रखी। यहां के कार्यकर्त्ताओं ने सेवा-कार्य में दिन-रात एक कर दिया। पाकिस्तान से आए लोगों में बहुत से प्रसिद्ध सज्जन थे। उनमें श्री अमरनाथ जी चड्ढा, निरंजननाथ जी खोसला, श्री शिवराम जी चण्डोक, श्री लखीमचन्द जी चावला, श्री उत्तमचन्द जी, चरणदास जी मल्होत्रा, श्री मोद प्रकाश शास्त्री जी, श्री चिरंजीत राय जी साहनी, श्री हर भगवान जी, मलिक रामलाल जी, श्री चेतन स्वरुप जी जैसे उत्साही कार्यकर्त्ता शामिल थे जो आर्य समाज करोल बाग के सदस्य के रुप में सम्मिलित हुए। बाद में ये लोग अपने सेवाकार्य से समाज के मुख्य स्तंभ बने और इन्होंने बड़ा आदर व सम्मान प्राप्त किया।

आर्य समाज करोल बाग में बड़े स्तर के सत्संग, वेद सप्ताह तथा वार्षिक उत्सव मनाये जाते थे। इन सत्संगो में बड़े-बड़े विद्वानों के प्रवचन होते थे। विद्वानों में उल्लेखनीय थे- पंडित बुद्धदेव जी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द जी), डा. युद्धवीर सिंह, चौ. देसराज जी, महाशय कृष्ण जी, पंडित रामचन्द्र देहलवी, श्री व्यासदेव शास्त्री, श्री शिवप्रकाश शास्त्री, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी भीष्म जी, महात्मा आनन्द भिक्षु, महात्मा आनन्द स्वामी, पं० रघुवीर सिंह शास्त्री, पं० शान्ति प्रकाश, पं० निरंजन देव इतिहास केसरी, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, स्वामी सत्यपत्ति जी, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, स्वामी रामदेव, स्वामी दीक्षानन्द जी मुख्यरूप से वर्णित हैं।

उन्हीं दिनों में देवनगर आर्य समाज के संयुक्त विरोध तथा प्रयास से गोमांस की दुकानें सरकार के आदेश से बन्द हो गईं। इस संघर्ष में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की प्रेरणा तथा सहयोग आर्य समाज को प्राप्त रहा।

आर्य कन्या पाठशाला के पश्चात् करोलबाग के क्षेत्र में लड़कियों के लिए बहुत बड़ा स्कूल बनवाने का स्वप्न तब पूरा हुआ जब प्रा० रामसिंह तथा श्री देशबन्धु गप्त के प्रयासों से एक स्थान उपलब्ध हुआ। आर्य समाज करोल बाग और सतभ्रावां ट्रस्ट के संयुक्त प्रयासों से सतभ्रावां स्कूल का निर्माण किया गया।

वर्तमान आर्य समाज रोड के नामकरण का श्रेय भी आर्य समाज उत्साही और दृढ़ संकल्पी कार्यकर्त्ताओं को है। जब नई सड़क बनी तो श्री अनन्तराम डाबर जी ने कई नोटिस बोर्ड बनवाकर सड़क के भिन्न- भिन्न स्थानों पर लगा दिए। उनके, खुशी राम सहगल तथा श्री देवदत्त आर्य जी के प्रयासों से सड़क का नाम आर्य समाज रोड रखा गया जो आज भी इसी नाम से प्रसिद्ध है। आर्य समाज करोल बाग के प्रयास से ही देवनगर का नामकरण हुआ।

आर्य समाज के वर्तमान के निर्माण के समय की एक विचित्र घटना है कि एक मुसलमान राज (मिस्त्री) ने काफी दिन काम किया लेकिन मजदूरी लेने से इन्कार कर दिया कि आर्य समाज धार्मिक स्थल है इसलिए मस्जिद तुल्य है, इसकी मजदूरी नहीं लेता।

उन दिनों आर्य समाज की मुख्य गतिविधियां निम्नलिखित थीं:

1. रेगड़ों, सांसी, कंजरों इत्यादि में आर्य समाज का प्रचार करना उन्हें शिक्षा देना तथा उनके रहन-सहन को स्वच्छ और ऊँचा बनाने का काम आर्य समाज करोल बाग ने किया।

2. सांसी कंजर सूअर पालते और जरायम पेशा में लिप्त थे। उनके पुरुषों को थाने में उपस्थिति देनी पडती थी। आर्य समाज करोल बाग ने इन लोगों को शिक्षित करके जरायम पेशा से मुक्त करा दिया।

3. लाला नारायण दत्त के नेतृत्व में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की स्थापना में आर्य समाज के सदस्यों का सहयोग रहा।

4. श्री लाला दीवानचन्द ठेकेदार की पत्नी श्रीमती सतभ्रावां से पवित्र दान प्राप्त कर उन्ही के नाम पर आर्य समाज करोल बाग ने सतभ्रावां आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। वर्षों तक आर्य समाज करोल बाग पाठशाला को आर्थिक सहयोग देता रहा।

5. सरकार से संघर्ष करके वार्षिक जलूस जो बड़े स्तर पर निकलता था उसकी स्वीकृति ली।

6. दिल्ली के आर्य समाजों की समस्याओं को सुलझाने में आर्य समाज करोलबाग अग्रसर रहा।

7. आर्य कन्या पाठशाला रैगरपुरा आर्य समाज करोलबाग की देन है।

8. क्षेत्र की राजनीति में अत्यन्त अधिक प्रभाव आर्यसमाज करोल बाग का रहता था। किसी भी प्रत्याशी को विजयी होने के लिए आर्यसमाज करोल बाग पर काफी कुछ निर्भर रहना पड़ता था।

9. हिन्दी रक्षा आन्दोलन में अग्रणी सहयोग।

10. शराब बन्दी आन्दोलन की केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह।

आर्य समाज करोल बाग ने अपने अतीत से प्रेरणा लेते हुए वर्तमान में भी इसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र बनाया हुआ है। पिछले 15 वर्षों में आर्य समाज ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किए जिसमें।

1. गुजरात भूकम्प, हिमाचल व केदारनाथ में बाढ़ के समय आर्थिक सहायता तथा कैम्प लगाकर सामान्य जनमानस से सहायता एकत्र की।

2. जापान से भी आर्थिक सहयोग लेकर धनराशि भारत के प्रधानमन्त्री को स्वयं अधिकारियों द्वारा दी गई।

3. मध्यप्रदेश के सरगुजा क्षेत्र में लगभग दस हजार वस्त्रों का वितरण।

4. हरियाणा के नूंह क्षेत्र के 256 मुस्लिम भाइयों की हिन्दु धर्म में वापिसी।

5. सौ क्वाटर्स में कई परिवारों को ईसाई बनने से रोकना।

6. कामन वैल्थ खेलों के दौरान गोमांस परोसने को प्रतिबन्धित करने के प्रयास की शुरुआत आर्य समाज करोल बाग में ही हुई।

7. स्वतन्त्रता सेनानियों का दिल्ली केन्द्र तथा समय-समय पर अधिवेशन का आयोजन आर्य समाज करोल बाग में होता है।

8. योग गुरु स्वामी रामदेव जी के योग प्रचार अभियान के आरंभिक दिनों की कार्यस्थली आर्य समाज करोल बाग रहा।

उपरोक्त कार्य आर्य समाज की पारम्परिक गतिविधियों से सम्बन्धित हैं। आज भी आर्यसमाज करोल बाग - राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जागरण के कार्यक्रमों में अग्रणी होकर भाग लेता है और संकल्प है कि अपनी प्रतिष्ठित धरोहर को संजोए रखेगा।

- कीर्ति शर्मा, प्रधान

जम्मू-कश्मीर बाढ़ पीड़ितों के मध्य राहत सामग्री वितरित

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर द्वारा जम्मू कश्मीर में सितम्बर 2014 में आई बाड़ से पीड़ित लोगों के लिये हमीरपुर कोना (जम्मू-परगवाल) में दूसरा व कुल आठवें सहायता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 255 लोगों को स्टील बर्तन व 45 बच्चों को बिस्कुट के पैकेट बाँटे। इस शिविर में सर्वश्री भारत भूषण आर्य (सभा प्रधान), राकेश चौहान (उप प्रधान) व योगेश गुप्ता (कोषाध्यक्ष) ने भाग लिया। यह सामान सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली द्वारा भेजा गया था।

- भारत भूषण आर्य, प्रधान

191वें जन्मदिवस (दयानन्द दशमी) पर विशेष

दयानन्द थे ईश्वर भक्त महान्

जगत् गुरु दयानन्द, किया विश्व कल्याण।
उन जैसा संसार में, हुआ नहीं विद्वान।।
हुआ नहीं विद्वान, निराले थे वे स्वामी।
ईश्वर भक्त महान, सन्त थे योगी नामी।।
धीर साहसी देशभक्त ब्रह्मचारी तपधारी।
दुखियों के हमदर्द, तपस्वी त्यागी भारी।।
देव पुरुष दयानन्द ने, जब देखा यह हाल।
ऋषिवर दयानिधान को भारी हुआ मलाल।।
भारी हुआ मलाल, सन्त ने कदम बढ़ाया।
आजादी का बिगुल बजाया जोश दिखाया।।
नारी जाति को पूज्य बताया दयानन्द ने।
गऊएं पालो सभी, सुझाया दयानन्द ने।।
आर्य कुमारो! नींद से, तुम भी जाओ जाग।
ऋषि की शिक्षा मानलो करो दोस्तों! त्याग।।
करो दोस्तों! त्याग, अमर जग में हो जाओ।।
करों वेद प्रचार, शुद्धि का चक्र चलाओ।।
बन जाओ गुरुदत्त बनो श्रद्धानन्द स्वामी।
लेखराम की तरह बनो उपदेशक नामी।।

- पं. नन्दलाल 'निर्भय'
ग्रा.पो. बहीन, पलवल (हरियाणा)

प्रथम पृष्ठ का शेष

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर बदले ....

एक दिन जाते समय बोले-बच्चा आपने मेरी बहुत सेवा की है, बताओ तुमकों मैं क्या आशीर्वाद दूँ।

गृहस्थ ने हाथ जोड़कर स्वामीजी से प्रार्थना की और एक पुस्तक (सत्यार्थ-प्रकाश) सुन्दर रंगीन वस्त्र में लपेटकर भेंट करते हुए कहा कि स्वामीजी आप इसको एक बार अवश्य पढ़ लेना बस यही हमारे लिए आपका आशीर्वाद होगा। वह साधु भेंट स्वरूप प्राप्त ग्रन्थ को लेकर निर्जन मार्ग से होते हुए अपनी यात्रा के लिए चल पड़े। रास्ते में पैदल चलते हुए दोपहर में वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए और सोचने लगे कि उस महानुभाव ने मेरी बहुत सेवा की है, इसलिए सेवक द्वारा दी गई पुस्तक को एक बार पढ़ के तो देखूँ, और उस पुस्तक को निकालकर पढ़ने लगे। प्रथम समुल्लास को पढ़ने लगे तो मन में ग्लानि हुई कि मैं तो सनातनी (मूर्त्तिपूजक) साधु हूँ और मैं यह क्या पढ़ने लगा। उन्हें क्रोध आया और पुस्तक को दूर फेंक दी। थोड़ी देर बाद मन की उद्विग्नता समाप्त हुई और पुन: मन में विचार आया, जिस व्यक्ति ने मेरी इतनी सेवा की है और बड़े प्रेम से यह भेंट दी, कम से कम एक बार तो अवश्य पढ़ना चाहिए। यह विचार कर पुस्तक को उठाने के लिए चल दिए और जब पुस्तक उठाई तो संन्यास प्रकरण के स्थान से (सत्यार्थ प्रकाश का) पृष्ठ खुल जाता है और स्वामीजी पढ़ने में संलग्न होते है तो पढ़ते चले जाते है। जब इस प्रकरण को पढ़ा तो महद् आश्चर्य से कहने लगे, अरे! हमें तो आज पता चला कि संन्यासी कौन होता है? उसके क्या कर्त्तव्य हैं? बस समझो कि उनके जीवन में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया और वह महान् संन्यासी वेद और ऋषि के सच्चे भक्त बने और शेष जीवन में आर्य समाज का प्रचार और प्रसार करते रहे और स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए।

नोट :- इसी प्रकार कोटि जनों के जीवन में आमूल परिवर्तन करने वाली यह पुस्तक हर हाथ तक पहुंच सके, हर घर तक पहुंच सके इसके लिए आवश्यक है कि हम पुस्तक मेलों के अवसर पर न्यून से न्यून मूल्य पर इसे उपलब्ध कराकर इस यज्ञ को सफल बनाएं।

ग्रन्थ परिचय

भ्रमोच्छेदन

प्रश्न 1: क्या भ्रमोच्छेदन भी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित किसी ग्रन्थ का नाम हैं?
उत्तर: जी हाँ, 'भ्रमोच्छेदन' नामक ग्रन्थ भी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखा गया था।
प्रश्न 2: यह ग्रन्थ महर्षि ने कब लिखा था ?
उत्तर: यह ग्रन्थ महर्षि दयानन्द ने 1937, ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीय तिथि गुरुवार को पूर्ण किया।
प्रश्न 3 : यह किस भाषा में लिखा गया?
उत्तर: यह हिन्दी भाषा में लिखा गया ग्रन्थ है।
प्रश्न 4: इसमें किस प्रकार के भ्रम को दूर करने का प्रयास किया गया है?
उत्तर : स्वामी दयानन्द जी के अपने शब्दों में ही, "अब जो राजा शिवप्रसाद जी ने स्वामी विशुद्धानन्द जी की सम्मति लिखी, ज्येष्ठ महीने में, निवेदन पत्र छपवा के प्रसिद्ध किया है, उसी के उत्तर में यह पुस्तक है।"
प्रश्न 5: ऐसा माना जाता है कि राजा शिवप्रसाद विद्वान् थे?
उत्तर : स्वामी दयानन्द जी की भी पहले यही धारणा थी और वे उनसे मिलना भी चाहते थे, परन्तु एक बार संवत् 1926, कार्तिक सुदी 14, गुरुवार के दिन अचानक कुछ समय के लिए स्वामी जी की उनसे बात हुई तो उनकी धारणा बदली। उनके शब्दों में, "परन्तु शोक है कि जैसा मेरा प्रथम निश्चय राजा जी पर था वैसा उनको न पाया। राजा जी की वाचालता बहुत बड़ी और समझ अति छोटी देखी है।"
प्रश्न 6: फिर कम समझ वाले के लिए इस ग्रन्थ की क्या उपयोगिता है?
उत्तर : वस्तुत: स्वामी जी इसके माध्यम से स्वामी विशुद्धानन्द जी को चेताना चाहते थे। उनके अनुसार, राजा जी तो संस्कृत विद्या पढ़े ही नहीं तो उनके सामने यह लेख तो ऐसा ही है जैसे बहरे के सामने अत्यन्त निपुण गाने वाले का वीणा आदि बजाना।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय से उद्धृत)

अगले अंक में एक और ग्रंथ के परिचय की प्रस्तुति होगी। - सम्पादक

आर्य समाज कलकत्ता का 121वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कलकत्ता का 121वाँ वार्षिकोत्सव 20 से 28 दिसम्बर तक हृषीकेश पार्क में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में पं० बंगाल प्रान्त के अतिरिक्त, झारखण्ड, बिहार, उत्तर प्रदेश एवं नेपाल से भी सैकड़ो जन उपस्थित हुए आचार्य डॉ० धर्मवीर जी (अजमेर), श्री कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर) प्रात: 7:30 बजे आचार्य डॉ० धर्मवीर जी के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ व ध्वजारोहण हुआ। अपराह्न 2 बजे से एक विशाल एवं सुसज्जित शोभयात्रा निकाली गयी। इस शोभायात्रा में हजारों की संख्या में स्त्री, पुरुष व बच्चे सम्मिलित हुए ।

आर्य समाज के तत्त्वावधान में बालक सत्संग, आर्य कन्या विद्यालय का कार्यक्रम, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, महिला सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, सायंकालीन अधिवेशन, बंग-भाषा कार्यक्रम एवं शंका समाधान आदि कार्यक्रम विभिन्न दिवसों में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुए।

-सत्यप्रकाश जायसवाल, (मन्त्री)

आचार्य चाहिएं

आर्य समाज पिम्परी के 'आधुनिक गुरुकुल' हेतु संस्कृत/हिंदी/अंग्रेजी भाषा के अनुभवी आचार्य चाहिए। इच्छुक महानुभाव संपर्क करें -

मंत्री, आर्य समाज पिम्परी,
महर्षि दयानन्द मार्ग, नियर राधीका शॉप पिम्परी, पुणे-411017
मो० 09372411631

वर चाहिए

प्रतिष्ठित वैदिक परिवार की सुन्दर स्वस्थ, संस्कारी, गृहकार्य में दक्ष ब्राह्मण युवती, जन्म 19 नवम्बर 1983, 5'4'' वर्ण-गेहूंआ, एम.ए.बी.एड., दिल्ली निवासी के लिए गुरुकुलीय स्नातक या आर्य समाजी परिवार का दहेज रहित विवाह हेतु वर चाहिए। (निर्दोष, नाम मात्र का विवाह) सम्पर्क-09810796203 (सायं 5 से रात्रि 9 बजे) Email:-ekomkaar.rpsharma@gmail.com

वेद कथा का आयोजन

आर्यसमाज सागर पुर एवं महिला सत्संग समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में वेद कथा का आयोजन दिनांक 23 फरवरी 2015 से 1 मार्च 2015 दोपहर 2:30 से सांय 5 बजे तक स्थान नगर वन पार्क सागर पुर में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर कथाकार कु. सविता आर्या एवं भजन संगीत श्री बच्चू आर्य के होंगे।

-सुखबीर सिंह आर्य, मन्त्री, दि.सभा

8वीं पुण्य तिथि पर

नि:शुल्क चिकित्सा जाँच शिविर एवं प्रतियोगिताएं

26 फरवरी से 1 मार्च 2015

स्थान -स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल, अलवर (राजस्थान)
समय - 10:00 से 12:00 बजे
26 फरवरी - निबंध प्रतियोगिता (आर्य बा0 उ0मा0 वि0) अलवर।
27 फरवरी - यज्ञ एवं श्रद्धाञ्जलि (आर्यसमाज - दयानन्दमार्ग अलवर)
28 फरवरी - देश भक्ति गीत प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण (आर्य समाज- दयानन्द मार्ग अलवर)

- अशोक कुमार आर्य, मुख्य ट्रस्टी

आर्यसमाज खलासी लाईन सहारनपुर में

हकीकत राय बलिदान दिवस

बसंत उत्सव, स्थापना दिवस व वीर हकीकत राय बलिदान दिवस पर विशेष कार्यक्रम आर्य समाज खलासी लाईन के 61 वें स्थापना दिवस पर आचार्य अनुज शास्त्री के पौरोहित्य में यज्ञ संपन्न हुआ। उन्होने हकीकत राय के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कुछ लोग इतिहास सुनाया करते हैं, परंतु कुछ लोग एसे होते है जो अपने कर्मों से इतिहास बनाया करते हैं। ऐसे ही एक महान् आत्मा थे धर्मवीर बाल हकीकत राय। भजनोपदेशक श्री हरिसिंह आर्य जी ने मधुर भजन प्रस्तुत किए। इससे पूर्व मकर संक्रान्ति यज्ञ का भी सुन्दर आयोजन हुआ। इस अवसर पर भजन श्रीमती ललिता आर्या एवं वैदिक विद्वान श्री हरिसिंह आर्य के प्रवचन हुए।

- सुरेश कुमार सेठी, आ.व्यय निरी.

शोक समाचार

श्री वेद प्रकाश शास्त्री का निधन

वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार जी के श्वसुर एवं सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध वैदिक विद्वान श्री वेद प्रकाश शास्त्री जी का लगभग 95 वर्ष की आयु में 30 जनवरी 2015 को देहावसान हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन पूर्ण वैदिक रीति से पंजाबी बाग श्मशान घाट पर किया गया।

श्री शास्त्री जी ने इस अमूल्य जीवन में राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दिल्ली के प्रधानाध्यापक पद को सुशोभित किया। सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी आप साहित्य सृजन के माध्यम से माँ भारती की सेवा करते रहे।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 2 फरवरी 2015 को आर्य समाज कीर्ति नगर में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं उनके परिजनों में उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5/6 फरवरी, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 फरवरी, 2015

वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी हेतु पुस्तकें भेजें

सर्व सज्जनों को सूचित किया जाता है कि अपने लाइब्रेरी से पुरानी पुस्तकें नाम व पता लिखकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थापित 'वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी' में भिजवाने की कृपा करें। वैदिक ज्ञान की अमूल्य निधि एक छोटी सी पुस्तक हजारों लोगों को लभान्वित कर सकती है। कृपया अपनी पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा निम्नलिखित पते पर भेजें – ***वैदिक सन्दर्भ पुस्तकालय, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1***

आर्यजन कृपया ध्यान दें आर्यसमाजों में प्रचार हेतु एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाएं का लाभ लें

सभी समाजों के अधिकारियों से सानुरोध प्रार्थना करते हुए विशष सूचना दी जा रही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि द्वारा जो प्रचार वाहन चलाया जा रहा है उसमें बहुत अच्छा भजनीक है जो अपने साथियों के साथ सुन्दर भजन व प्रचार का कार्य कर रहा है। आप इनको वाहन सहित या जिस आर्य समाज मन्दिर के आगे वाहन खड़ा करने की जगह न हो तो भी भजनीक को बुला सकते हैं। वाहन में वैदिक साहित्य प्रचार सामग्री भी उपलब्ध रहेगी। इस वाहन पर होने वाला खर्चा जैसे भजनीक, वादक व वाहन चालक तथा सहायक सभी का खर्चा व वेतन आपकी दि.आ.प्र.सभा द्वारा व्यय किया जाता है यदि आप इसका लाभ उठायें जिससे प्रचार कार्य सरलता पूर्वक बढ़ता रहे, जिसकी समाज को अपेक्षा है। सम्पर्क करें– **एस.पी. सिंह** मो. 9540040324

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन भेजें

आर्ष पाठ-विधि से विद्याध्ययन करने वाले छात्रों को सूचना प्रेषित की जाती है कि जो विद्यानुरागी, अपने अभिभावकों से आर्थिक सहायता नहीं पाते है अथवा माता-पिता सहयोग करने में असमर्थ हैं। ऐसे विद्यार्थी अपना नाम-पता विद्यालय का नाम और अपने आचार्य महानुभाव के हस्ताक्षर कृत सम्पर्क सूत्र के साथ आवेदन प्रार्थना पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 के पते पर प्रेषित करें। ***महामन्त्री***

'आस्था' पर प्रेरक वैदिक प्रवचन – प्रतिरात्रि : 9:30 बजे

प्रत्येक सोमवार एवं मंगलवार – आचार्य ज्ञानेश्वरार्य (प्रेरक-प्रवचन)
प्रत्येक बुधवार – आचार्य सत्यजित् आर्य (योग दर्शन)
प्रत्येक गुरुवार – डॉ0 विनय विद्यालंकार (व्यक्तित्व-विकास)
प्रत्येक शुक्रवार व शनिवार – डॉ0 वागीश आचार्य (प्रेरक प्रवचन)

आर्यजनों कि इस सूचना को प्रत्येक माध्यम से अपने मित्रों–परिचितों तक नियमित भेजते रहें।

प्रतिष्ठा में,

आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार में निबन्ध प्रतियोगिता

आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार के प्रांगण में चित्रकला व निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन सारस्वत बैंक के सौजन्य से किया गया। इसमें विद्यालय की नर्सरी कक्षा से लेकर पाँचवी कक्षा तक के सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रत्येक कक्षा से प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले बच्चों को विद्यालय के मैनेजर कर्नल आर. के. वर्मा जी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

– उषा रेहानी, प्रधानाचार्या

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह